टोडाराय सिंह के संरक्षित स्मारक

Protected Monuments of Todarai Singh

कल्याण रायजी मंदिर

Kalyanraiji's Temple

प्रत्नकीर्तिमपावृणु

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण

Archaeological Survey of India

जयपुर मण्डल, जयपुर

Jaipur Circle, Jaipur

2003

टोडाराय सिंह के संरक्षित स्मारक

जयपुर से 119 किमी. दक्षिण में टोंक जिले में स्थित टोडाराय सिंह शहर का नाम मेवाड़ के सिसोदिया राजा रायसिंह के नाम पर पड़ा। अभिलेखों तथा प्रशस्ति के अनुसार यह स्थान प्राचीन तक्षकगढ़ अथवा तक्षकनगर के नाम से जाना जाता था। तीसरी व चौथी शताब्दी में मथुरा और पद्मावती पर शासन करने वाले नाग वंश के राजाओं ने इस शहर की स्थापना की । प्राप्त मुद्रा अनुकृति के साक्ष्यों से प्रमाणित होता है कि पद्मावती के नाग वंश का सम्बन्ध पंजाब के प्रवासी मालव जनजाति के साथ था जिनका तत्कालीन समय में मेवाड़, कोटा एवं टोंक क्षेत्र पर आधिपत्य था। प्रयाग प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त ने मालव जनजाति को पराजित कर अपने अधीन कर लिया था तथा इनके ऊपर गुप्त शासकों का आधिपत्य छठी शताब्दी तक बना रहा। सातवीं सदी ई. के बाद टोडा चाटसू के गुहिल वंश, अजमेर के चौहान (11-12वीं सदी ई.) एवं पाटन के सोलंकी वंश (12-13 वीं सदी ई.) के अधीन रहा । 15 वीं शताब्दी में टोडा चालुक्य राजा गोविन्द राय के अधिकार में आया जिन्होंने इसे मेवाड़ के राणा के सुपुर्द किया। राजा जयसिंह (1700-1743 ई.) के काल तक टोडा जयपुर राज्य का अभिन्न भाग था। अपने लम्बे काल में टोडाराय सिंह के शासकों ने यहाँ की कला व स्थापत्य के वैभव को भव्य मंदिर, बावड़ी, सोपान युक्त कुण्ड, तालाब, किले तथा महलों के रूप में प्रस्तुत किया। यहां के प्रमुख स्मारक पीपाजी-का-मंदिर, लक्ष्मी नारायणजी मंदिर, कल्याणरायजी मंदिर, काला पहाड़ मंदिर, हाडी रानी-का-कुण्ड तथा बीसलपुर स्थित बीसल देवजी मंदिर राष्ट्रीय महत्व के स्मारक घोषित किये गये हैं। प्रमुख स्मारकों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

पीपाजी-का-मंदिर Pipaji'S Temple

पीपाजी-का-मंदिर: पन्द्रहवीं शताब्दी में राव पीपाजी द्वारा निर्मित यह मंदिर ऊँची जगती पर बना है जिसमें प्रवेश हेतु पश्चिम से भव्य मेहराबयुक्त द्वार है। पश्चिमाभिमुख यह मंदिर गर्भगृह

अन्तराल, चौकोर स्तम्भ-युक्त मण्डप और मुख-मण्डप से युक्त है। पंचरथ गर्भगृह का प्रवेश द्वार त्रिशाखाओं से अलकृंत है तथा निचले भाग में द्वारपालों का अंकन मिलता है। प्रवेश-द्वार में उतरंग के मध्य ललाटबिम्ब पर बैठे हुए गणेश विराजमान है। मन्दिर का वक्ररेखीय शिखर अब खण्डित हो चुका है तथा केवल उरूश्रृंग तथा भद्र-रथिकाऐं सुरक्षित बची हैं। वर्तमान में मण्डप व मुख-मण्डप छत विहीन हैं। पार्श्व कक्षासन युक्त मण्डप के स्तम्भों पर नीचे घट-पल्लव तथा ऊपरी भाग में कमल आकृतियों का अंकन है। इसके बाह्य भाग में पत्र-वल्लरी, कमल तथा व्याल आदि का चित्रण मिलता है। मुख मंदिर के अतिरिक्त इसके चारों ओर अन्य लघु मंदिर के अवशेष मिलते हैं। मण्डप के नीचे एक सीढ़ीदार कुण्ड भी बना है।

लक्ष्मी नारायणजी मंदिर Lakshmi Narainji's Temple

लक्ष्मीनारायण-जी मंदिर: विष्णु को समर्पित यह पूर्वाभिमुख मंदिर ऊँची जगती पर निर्मित है जिसे गोपीनाथ मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। योजना में यह मंदिर गर्भगृह, अन्तराल, मण्डप एवं मुख-मण्डप युक्त हैं। पंचरथ-गर्भगृह वक्र-रेखीय शिखर से मण्डित है जिसका प्रदक्षिणा-पथ खुला है। मण्डप के स्तम्भ अत्यन्त अलंकृत हैं। अधिष्ठान भाग में कीर्तिमुख, हाथी, घोड़े, ढोलामारू, लक्ष्मीनारायण, नृत्य-गणेश, वाराह, नरसिंह, गज-लक्ष्मी आदि का अकंन मिलता है। जंघा भाग पर उत्कीर्ण प्रमुख देवताओं में लकुलीश, विष्णु तथा मिथुन-आकृतियों का अंकन है। इस मंदिर का निर्माण सत्रहवीं शताब्दी में हुआ था।

कल्याणरायजी मंदिर: विष्णु को समर्पित यह पूर्वाभिमुख मंदिर ऊँची जगती पर निर्मित है। क्षैतिज योजना में यह मंदिर गर्भगृह, अन्तराल व स्तम्भों पर आधारित मण्डप युक्त है। पंचरथ गर्भगृह वक्र-रेखीय शिखर से मण्डित है तथा प्रदक्षिणा-पथ खुला है। अधिष्ठान भाग में सामान्य मूर्तियों का तथा जंघा भाग पर नृत्य तथा वाद्ययंत्र बजाते स्त्री-पुरूष मूर्तियों का अंकन है। उत्तर, पश्चिम व दक्षिण के

भद्र-रथिकाओं में क्रमशः उमा-महेश्वर, त्रिमूर्ति शिव तथा सिंहवाहिनी देवी की मूर्तियां उत्कीर्ण हैं। मण्डप के पूर्वी बाह्य भाग पर ढोलामारू का अंकन मिलता है। शैलीगत विशेषता के आधार पर इस मंदिर का निर्माण सोलहवीं सदी ई. का प्रतीत होता है।

काला पहाड़ मंदिर: पूर्वाभिमुख यह मंदिर शहर के बीच एक पहाड़ी पर स्थित है। सोलंकी शासकों द्वारा पन्द्रहवीं-सोलहवीं शताब्दी ई. में निर्मित यह मंदिर क्षैतिज योजना में गर्भगृह, अन्तराल व मण्डप युक्त है। गर्भगृह का अलंकृत प्रवेशद्वार पंचशाखा युक्त है। मंदिर के बाह्य भाग में विष्णु के दशावतार, नवग्रह, मल्ल-युद्ध तथा मिथुन-आकृतियों का अंकन है।

बावड़ी (हाडी रानी-का-कुण्ड): यह सीढ़ी युक्त भव्य बावड़ी सत्रहवीं शताब्दी में निर्मित हुई । योजना में यह वर्गाकार है जिसके पिछले भाग में दो मंजिला गलियारा है जिसके अग्रभाग में सात मेहराबदार द्वार हैं। निचले तल के आलों में ब्रह्मा, गणेश तथा महिषासुर-मर्दिनी की मूर्तियां अलंकृत है। शेष तीन दिशाओं में कुण्ड के तल तक पहुँचने के लिए पाँच सीढ़ियाँ बनी हैं।

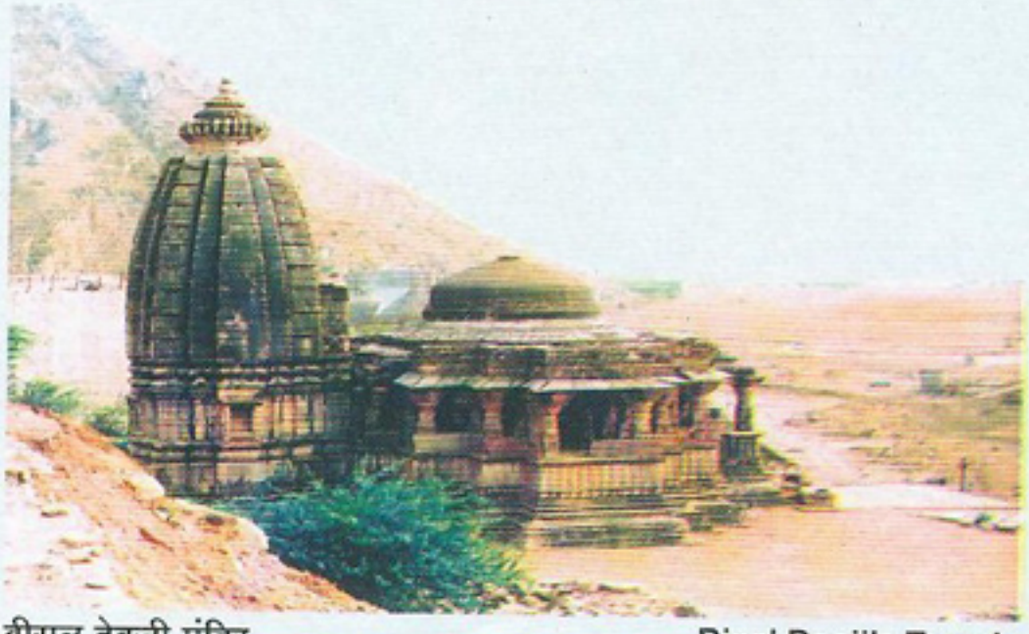

बीसल देवजी मंदिर Bisal Deoji's Temple

बीसल देवजी मंदिर: बीसलपुर स्थित यह मंदिर गोकर्णेश्वर के नाम से भी जाना जाता है। ऊँची जगती पर निर्मित इस पश्चिमाभिमुख मंदिर का निर्माण बारहवीं शताब्दी में चौहान राजा विग्रहराज चर्तुथ ने करवाया था। योजना में मंदिर गर्भगृह, अन्तराल, मण्डप व मुख मण्डप युक्त है। पंचरथ गर्भगृह शिखर मण्डित है। इस मंदिर में कई लघु-लेख है, जिनमें विक्रम संवत 1231 (1175 ई.) का लेख सबसे प्राचीन है। 1187 ई. के एक अन्य अभिलेख में चाहमान राजा पृथ्वीराज तृतीय का उल्लेख है। एक अन्य स्तम्भ पर उत्कीर्ण तीन पंक्ति के अभिलेख में जोगी अचिन्त्यध्वज का नाम उल्लिखित है जिससे पता चलता है कि यह मंदिर पाशुपति-सम्प्रदाय से सम्बन्धित था।

Protected Monuments of Todarai Singh

Todarai Singh, named after Raja Rai Singh Sisodia of Mewar is situated at a distance of 119 km south of Jaipur in district Tonk. According to inscriptions and prasastis the place was known as Takshakagadha, the city of Takshakas and was founded by the Naga king, who were ruling over Padmavati and Mathura in third-fourth century A.D. Malavas, a migrant tribal community of Punjab also became powerful in Mewar, Tonk and adjoining areas during this period, who were closely associated with the Nagas of Padmavati, as evidenced from their similar fabrication of coins. The Prayag prasasti of Samudragupta records the defeat of these Malava tribes by the Gupta king and acceptance of Samudragupta's overlordship and the suzerainty of the Gupta's continued up to sixth century A.D. From seventh centtury onwards, Toda was ruled by the Guhilas of Chatsu, Chauhanas of Ajmer (A.D. 11th-12th) and Solankis of Patan, Gujarat (A.D. 12th-13th) successively. In fifteenth century A.D., Toda was captured by Govind Ray of Chalukya and passed under the Ranas of Mewar. During the period of Raja Jai Singh (A.D. 1700-1743) Toda became a part of Jaipur state. During this long phase of history, the rulers of Todarai Singh had contributed their art and architectural excellences in the forms of temples, baoris or step-wells, tanks, forts, palaces, etc. Among these, Pipaji's temple, Laxmi Narainji's temple, Kalyanraiji's temple, Kala Pahar temple, Old Baori known as Hadi Rani-Ka-kund and Bisal Deoji temple are declared protected as monuments of national importance. The details of which are as under:

Pipaji's Temple: Facing west and entered through a lofty arched gateway, this temple is believed to have been constructed by Rao Pipaji in fifteenth cent. A.D. Stands on a high jagati it consists of a garbhagriha, an antarala or vestibule, a square pillared mandapa and a porch on axial plane. The sanctum is pancharatha on plan with open circumambulatory passage, having carved trisakha variety of doorway flanked by dwarpalas. The lalatabimba displays seated Ganesa in the centre. The multi-spired curvilinear sikhara is presently missing, only the basal portion is intact, showing urusringas and bhadrarathikas. The mandapa has two lateral transepts with projected balconies or kakshasanas. The pillars are decorated with ghatapallava design at the base and lotus at the top reflecting Pratihara influence. The mandapa and portico are roofless. The exterior part of the mandapa is decorated with scroll, lotus, vyalas, etc. Apart from the main shrine, architectural members of miniature shrines have also been traced around. There is an underground stepped kund.

Lakshmi Narainji's Temple: Popularly known as Gopinath temple, it is built on a high jagati. Dedicated to Vishnu and facing east, this temple consists of a garbhagriha, an antarala, a pillared mandapa with two kakshasanas and a portico. It is pancharatha on plan having open pradakshinapatha with a curvilinear sikhara, surmounted by amalaka. The pillars of the mandapa are highly ornamented showing ghatapallava designs. The adhisthana is adorned with kirtimukhas, elephants, horses, human figures scenes of Dholamaru, Lakshmi-Narayana, dancing Ganesa, Varaha, Narasimha, Gaja-Lakshmi, etc. The jangha portion depicts figures of Lakulisa, Vishnu, semi-divines, mithunas, etc. The superstructure of the temple appears to be built sometimes in seventeenth century A.D. over ancient temple base.

Kalyanraiji's Temple: Facing east, this temple is dedicated to Kalyanji or Vishnu. Built on a high jagati, it consists of a garbhagriha, an antarala, a pillared mandapa with open circumambulatory passage. The sanctum is pancharatha on plan, and it is crowned by a curvilinear sikhara with

urusringas. The plinth is adorned with beautiful sculptures. The jangha is carved with the panel of dancers, musicians, female figurines in various postures. The bhadra niches contain images of Uma-Maheswar, Trimurti Siva, Simha-vahini goddess on the north, west and south respectively. The most noteworthy figures are of Dholamaru on camel shown on the eastern outer wall of the pillared mandapa. The temple is stylistically dated to sixtenth century A.D.

Kala Pahar Temple: Stands on a hillock and facing east, this temple was probably built during fifteenth-sixteenth century A.D. It consists of a square sanctum, an antarala and a mandapa. The temple is pancharatha on plan and sikhara is missing. The sanctum doorway has panchasakhas which is elaborately decorated. The mandapa is completely ruined condition. All around the temple, the panels of das-avatara of Vishnu, Navagraha, mithunas, wrestling scene, etc. are intricately carved.

हाडी रानी-का-कुण्ड Hadi Rani-Ka-Kund

Old Baori Locally known as Hadi Rani-ka-Kund: This baori or step-well of seventeenth century A.D. is rectangular on plan with double storeyed corridors. On the western side each corridor has seven arched gateways . In the lower storey, there are images of Brahma, Ganesa and Mahishamardini, enshrined in niches. On the other three sides, steps are arranged in a set of thirteen each at higher level and five each at lower level that goes up to the level of water.

Bisal Deoji's Temple: This temple, popularly known as Gokarneswara and was built by Vigraharaja-IV in twelfth century A.D. Facing west and stands on a raised jagati, it consists of a sanctum, an antarala, a mandapa and a porch. The sanctum is pancharatha on plan and crowned by a sikhara. The temple has several short inscriptions, the oldest is of V.S. 1231 (A.D.1175). Another inscription dated A.D. 1187 mentions about Chahamana chief Prithviraja III. The three short lines in one of the pillars read as Jogi Achintyadhvaja indicate that this temple was associated with Pasupati sect.

आलेख : डॉ. डी.एन. डिमरी, डॉ. संगीता चक्रवर्ती, बी.आर. सिंह,
नयन आनन्द चक्रवर्ती एवं राजेन्द्र यादव
छायाचित्र : एस.सी. गुप्ता एवं आर.पी. माथुर

Text compiled by : Dr. D.N. Dimri, Dr. Sangeeta Chakraborty, B.R. Singh, Nayan Anand Chakraborty & Rajendra Yadav
Photographed by : S.C. Gupta & R.P. Mathur

Printed by : PRINT-O-PRINT, JAIPUR• Tel. 2315967, 2313516, 9414043784